3 पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ ।
चाह नहीं प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ ।।

चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि, डाला जाऊँ ।
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ ।।

मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक ।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक ।।

-माखनलाल चतुर्वेदी

शब्दार्थ

चाह= इच्छा
सुरबाला= देवकन्या
बिंध=छेदा जाना, छिदकर
सम्राट=जिसके अधीन कई राजा हों।
शव=मृत शरीर
इठलाऊँ= नाज-नखरे करूँ ।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. निम्नलिखित पंक्तियों के भावार्थ स्पष्ट कीजिए-

चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ ॥

2. प्रस्तुत पाठ में 'मैं' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?
3. "हे वनमाली, मुझे तोड़कर उस रास्ते पर फेंक देना, जिस रास्ते से होकर अपनी मातृभूमि पर शीश चढ़ाने वाले वीर जाते हैं।" उपर्युक्त भाव पाठ की जिन पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्ति होती है,उन पंक्तियों को लिखिए।
4. **"भाग्य पर इठलाऊँ" का कौन-सा अर्थ ठीक लगता है?**
   (क) भाग्य पर नाराज होना
   (ख) भाग्य पर गर्व करना
   (ग) भाग्य पर विश्वास न करना
5. 'चाह नहीं' पद कवि की किस तरह की भावना को व्यक्त कर रहा है?

पाठ से आगे

1. बड़े-बड़े सम्मान पाने की बजाय पुष्प उस पथ पर फेंका जाना क्यों पसंद करता है, जिस पर मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले वीर जाते हैं? अपना विचार व्यक्त कीजिए।
2. पुष्प की भांति आपकी भी कोई अभिलाषा होगी। उन्हें दस वाक्यों में लिखिए।

व्याकरण

1. 'भाग्य' शब्द के पहले **सौ** उपसर्ग लगाकर 'सौभाग्य' शब्द बनाते हैं। इसी प्रकार **नि, दुः, अन्** उपसर्ग लगाकर प्रत्येक से दो-दो शब्द बनाइए।

कुछ करने को

1. कल्पना के आधार पर इस कविता से संबंधित एक चित्र बनाइए।
2. मातृभूमि या देश-प्रेम से संबंधित अनेक कवियों ने कविताएँ लिखीं हैं। उनकी कविताओं को खोजकर पढ़िए और अपनी कक्षा में सुनाइए।